भारत में गरीबी की समस्या :-

Problem of poverty in Indian context.

साधारण अर्थों में धन के अभाव को गरीबी की संज्ञा दी जाती है। आधुनिक वैज्ञानिक अर्थ में गरीबी या निर्धनता एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें व्यक्ति अपनी और अपने आश्रितों की न्यूनतम आवश्यकताएँ रोटी कपड़ा मकान आदि पूरा करने में तथा उनकी भलिभाँति पालन पोषण करने में असमर्थ रहता है।

Pandey (1988) के अनुसार, "If a family does not adequate nutrition even after spending all its time energy and money trying to procure it, it should be considered wholly poor.

भारत में गरीबी सीमा का अंदाज कई लोगों ने अपने अपने अध्ययन में लगाया है। Dandekar and Rath (1971) ने भारत में एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण जनसंख्या में 40% तथा शहरी जनसंख्या में 20% गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

निर्धनता या गरीबी के कारण बहुत से समस्याओं का जन्म ... जो निम्नलिखित है :-

(1) पारिवारिक असंतोष :→ निर्धनता से परिवार के सदस्यों में कई कारणों से असंतोष फैल जाता है जो धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते पारिवारिक कलह का रूप ले लेता है। निर्धनता के कारण व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों की अनिवार्य आवश्यकताएँ जैसे भोजन की आवश्यकता, वस्त्र की आवश्यकता को भी पूरा करने में असमर्थ रहता है। फलस्वरूप परिवार के सदस्यगण अपने परिवार के सीमित साधनों को अपनी अपनी ओर खींचने लगता है जिससे उनमें एक दूसरे के प्रति स्नेह एवं प्रेम भाव की कमी आने लगती है और अविश्वास एवं असंतोष की पकड़ मजबूत होने लगती है।

(2) उन्नति के मार्ग में बाधाएँ :→ गरीबी व्यक्ति तथा उसके परिवार के सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक एवं आर्थिक उन्नति में बाधा डालकर कई तरह की समस्याएँ उत्पन्न कर देता है। भारत [illegible] वहाँ न हो यदि व्यक्ति गरीब है तो वह न तो ठीक ढंग से अपने परिवार को शिक्षित कर सकता है और न ही अपने आप को आर्थिक रूप से उन्नत ही कर सकता है। इतना ही नहीं उसका सामाजिक क्षेत्र में भी वह अपने आपको पिछड़ा पाता है क्योंकि उसके सामने धनाभाव होता है।

(1) पारिवारिक असंतोष :→ निर्धनता से परिवार के सदस्यों में कई कारणों से असंतोष फैल जाता है जो धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते पारिवारिक कलह का रूप ले लेता है। निर्धनता के कारण व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों की अनिवार्य आवश्यकताएँ जैसे भोजन की आवश्यकता, वस्त्र की आवश्यकता को भी पूरा करने में असमर्थ रहता है। फलस्वरूप परिवार के सदस्यगण अपने परिवार के सीमित साधनों को अपनी अपनी ओर खींचने लगता है जिससे उनमें एक दूसरे के प्रति स्नेह एवं प्रेम भाव की कमी आने लगती है और अविश्वास एवं असंतोष की पकड़ मजबूत होने लगती है।

(2) उन्नति के मार्ग में बाधाएँ :→ गरीबी व्यक्ति तथा उसके परिवार के सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक एवं आर्थिक उन्नति में बाधा डालकर कई तरह की समस्याएँ उत्पन्न कर देता है। भारत जैसे देश में यदि व्यक्ति गरीब है तो वह न तो ठीक ढंग से अपने परिवार को शिक्षित कर सकता है और न ही अपने आप को आर्थिक रूप से उन्नत ही कर सकता है। इतना ही नहीं अन्य सामाजिक क्षेत्रों में भी वह अपने आपको पिछड़ा पाता है क्योंकि उसके सामने धनाभाव होता है।

अध्ययन में पाया कि निर्धनता युवकों में चोरी, गिरहकटी, डकैती जैसे व्यवहारों को करने को प्रेरित देता है तथा महिलाओं में वेश्यावृत्ति एवं चोरी को पनपने में अधिक मदद देता है। इन्होंने बाद में (1982) में एक सर्वे किया जिसमें वेश्याओं के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया और पाया कि करीब 65% वेश्याओं को निर्धनता ने वेश्यावृत्ति अपनाने पर मजबूर कर दिया है।

⑥ आर्थिक प्रतियोगिता एवं अन्तःसमूह प्रतिद्वन्द्वता :-

निर्धनता से आर्थिक प्रतियोगिता एवं अन्तःसमूह प्रतिद्वन्द्वता में वृद्धि होती है। गरीब लोगों के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए सरकार उनके लिए तरह तरह के आरक्षण की सुविधा प्रदान करती है। इसका परिणाम यह होता है कि आर्थिक रूप से सबल वर्ग यह समझने लगते हैं कि सरकार उनकी रोटी छीनकर निर्धन लोगों को दे रही है। फलतः वे निर्धन को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझ बैठते हैं और उनके प्रति द्वेष भाव रखना प्रारंभ कर देते हैं। ऐसी सरकारी सुविधा का लाभ उठाकर यदि कुछ निर्धन अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार पाते हैं फिर उनकी प्रतियोगिता समाज के आर्थिक रूप

से सबल व्यक्तियों से होने लगती है। जिसका परिणाम यह होता है कि आर्थिक प्रतियोगिता तीव्र होती है जो सामाजिक दृष्टिकोण से हानिकारक होती है

(7) **सामाजिक परिवर्तन के प्रति अनभिज्ञता :→** प्रत्येक सभ्य समाज में तरह तरह के नए सामाजिक परिवर्तन होते रहते हैं जिन्हें अपनाकर व्यक्ति अपनी जिंदगी में खुशहाली पाता है। निर्धन व्यक्ति इन सामाजिक परिवर्तनों से अनभिज्ञ रहता है और निर्धन अपनी जिन्दगी को पुराने ढाँचे में किसी तरह ढोने के लिए विवश होता है।

(8) **शारीरिक एवं मानसिक रोगों से संबंधित समस्याएँ :→** निर्धनता में व्यक्ति दोनों शाम की रोटी भी किसी तरह जुटा पाता है। एक तरफ पोषक तत्वों के अभाव में तथा दूसरे तरफ कड़ी मेहनत के कारण निर्धन व्यक्ति की शारीरिक शक्ति धीरे धीरे क्षीण होने लगती है जिससे उसमें शारीरिक रोग की प्रबलता तथा उससे संबंधित समस्याओं में वृद्धि होने लगती है। ऐसे व्यक्तियों में रोग के इलाज के लिए साधन जुटाने की असमर्थता पायी जाती है। शारीरिक क्षमता धीरे धीरे मानक व्याधियों को भी ब्योत। देने लगती है। अन्त में दोनों मिलकर गरीब की जिन्दगी को

(6)

जर्जर बना देता है और कई तरह के उलझनों एवं समस्याओं से उनकी जिन्दगी बोझिल हो जाती है।

(9) सामाजिक उपेक्षा :→ निर्धनता से सामाजिक उपेक्षा एवं असरुचि के भाव भी उत्पन्न होते हैं प्रायः गरी व्यक्ति को समाज में उसकी तंगी के कारण लोग उसकी उपेक्षा करते हैं तथा अपने आपको को उससे दूर रखने का प्रयास करते हैं समाज के सम्पन्न लोग अपने बच्चों को निर्धन के बच्चों के साथ मिल जुलने की अनुमति भी नही देते है। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चों का सामाजिक तिरस्कार होता है जिससे उनमे असामाजिक प्रवृतियाँ अधिक तेजी से पनपती है।

Conclusion :→ यह कहा जा सकता है कि निर्धनता एक सामाजिक व्याधामुखी है जो समाज के मौलिक संरचनाओ को कमजोर कर देती है।